

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

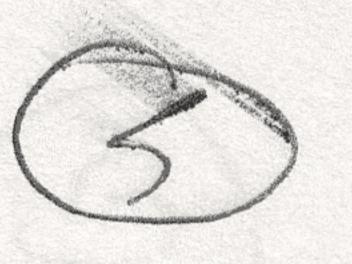
सामन् म्यान्य निवास्य निवास्य निवास्य म्यान्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य मही त्रह्मकी जाया था इ.व्यं जुला लाग करिया मान्यं सिव श्री संक्रमः सम् वाय लागानात् वर्गणाल्य असिताः। अस्ति स्वेत्राम् अस्ति। स्वास्य स्पर्शः संख्यावित्रिक्षितिः वन्त्रत्यं वताः वनस्य संवागव्यवित्रागश्यवनायं वावनायदावः अवाधः स रवद्राविम् शहेकामतागु उत्ते ब्लाह्म इया बहुत महत्ता मावह स्थाद हुवव पार क्लावता न मा वन्तेवला मार्ड र नंत्रणा न न मनं प्रमार्थना व वव है। अमरार्थने व वव है। अमरार्थने व वव है ने प्रमार्थने विवय मन्त्रः तिर्वाणमानम् म्यान्य स्थानमा देव त्याम् । सामान्यं दि वि अंक्रोणसं व नंशावनम् स्थान जिल्ला समावमनेवा जाते. हा वनाम न्ना हवा माति सेवा वननेवेळ्यते. इज्या त्या दिल्ला निका वश्वमत्वास्त्रते। माध्यावस्त्रावस्य ज्ञावस्य ज्ञावस्य माध्य। स्व नेपा क्रिय द्वारा स्व स्व स्व स्व मिक्सिनितं । १०। वर्ण से ने व्याप क्षेत्र क्षे तः।११। स्त्रभावस्तिविधालसमात्रात्रात्रात्रात्रस्त्रः। त्रामभोवस्या व्यापात्रस्ति व्यवस्था व्यवस्था । । ।

भीनाम.

ए यं त्रे विध्यमापन्यसंमग्रीमाय द्याते। सम्मानीमिवसाध में ते वाचा दिक्र स्याते । श्री द्याप्यः पं यमाथाः स्रवेदे समक्षावितः। सनाथन्त स्व प्रस्ताचा ग्राणा दिति ग्राः त्रिषः। १५० सामान्य पितिना स्वितिता का नतात्वं में वेत्र त्य त्रे विध्यं पित्यो वित्र म् १५६। समक्षाविका गरणां दे समक्षावित्र वेत्र स्वाधित्र वेत्र स्वितित्र में विश्व प्रति स्वाधित्र वेत्र स्वाधित्र वेत्र स्वाधित्र वेत्र स्वाधित्र वेत्र स्वाधित्र वेत्र स्वाधित्र स्वाधित् स्वाधित्र स्वाधित्य स्वाधित्र स्वाधित 2月11日。

सितिर्ज्ञतंत्रणाहेत्रः वसने मन १ वयः पनापत्र त्यस्ति वयं सी वाभेगा अया समी २५ । का वर्षा सित्र व्या स्वित्र तत्यं वर्ष महत्र दिल्ला दिवं यस्ता भिवत्या भिव्य श्विति है। २५) हथा ने मर वे नु कि स्वा में भावत्य समिति है। वस्ते प्रमा समिति है। वस्ते वस्ते समिति है। वस्ते प्रमा समिति है। वस्ते प्रमा समिति है। वस्ते प्रमा समिति है। वस्ते वसि है। वसि है। वसि वसि है। वसि वसि है। वसि

35年7



ATATAT.

मनापिनतलाहा नायन ध्वन्तंत्रलामकेतः अभी अमी अमी ध्वने विद्या हो विद्या है। यह ने विद्या विद्या के स्वा के स्वा के से विद्या के से विद्य



3月17月3

प्रकेष्ठसम्बेतानां मणा मसम्बावतः। तत्रापि सम्याद्य सम्वाव समः स्कातः। ६०। महनीनां सम्वेम सम्यापनमुत्रहा विशेष पामवामहर्म् विनां त्रहें भवेतः ६०। महिलाह्य वाभ्येते त्यं वा त्रवामवामवेतः ६२। महोविद्ध स्वाद्य वाभ्येते त्यं वा त्रवामवेतः ६२। महोविद्ध स्वाद्य वाभ्येते त्यं वा त्रवामवेतः ६२। महोविद्ध स्वाद्य वापाने स्वातः विभागाने स्वातः स



आवः माजाश्यास्त्रसामान्या सामरा को पना न योथा ज सं स्तीमिजाने जामको प्रेम कर्षा मानि हिंदी कि पत्र में के साजा मानि हिंदी कि प्रेम के साजा मानि हिंदी कि प्रेम के साम कि प्रेम कि प्रेम के साम के साम कि प्रेम कि प्रेम कि प्रेम के साम कि प्रेम कि प्रेम के साम कि प्रेम कि प्रेम के साम कि

and the second of the second o

ATTO.

The man was the man who have ममदेनिवनावस्याननुभावस्तामके र नेता को न्याक्यन्ति विकास निवास के विकास के व माण द्रमाभिमा सेवाभि में शामितिका जाता। । म्रंगमाः । जार्ग भी वना व मवस्ति वर्ग हैं। म्महनहनेगार्यममाम् र्न ग्राम्सम्। अर्माभ्रम्भावनावश्रह्मान् जाविवः च ार्मम् स युणाः सचिष्ठिम् । चिषिकितियः। मं एषा दिश्विभागोत्र अभवेषायुग्यान्तः। एए। मंद्रीतियः। विभागव असंस्थि। दिला देला मामन्य संभा दिल प्याच्या द्या सम इदेने नेका श्विमा; गुणा ; च र जि मः योषण्याः मर्नेमंगष्ट्रेय्यन् वर्ण्यात् बद्दं लार्थान्यः साहिष्या वर्ण्या माद्य मायभाषा क्याने के देशिय गुणाशमं क्यादिनपर नामा इका शाक्षिय प्राणा गुजा केनो स्मानान्य ग्राण्य रेमकी शिंगां संख्यादिनयनायों गाइया सिर्ध्यम, इश्रेष्ट्रीय भीति

मिनित स्वाप असकोत् सः स्वापण ते प्रस्वाः। संवा प्रविविभागाय वे थे ते उद्ध में गास्य की गांच कि कि मा तो क्षण अस्ति स्वाप अस्वाप कि स्वाप अस्ति स्वाप स्वाप

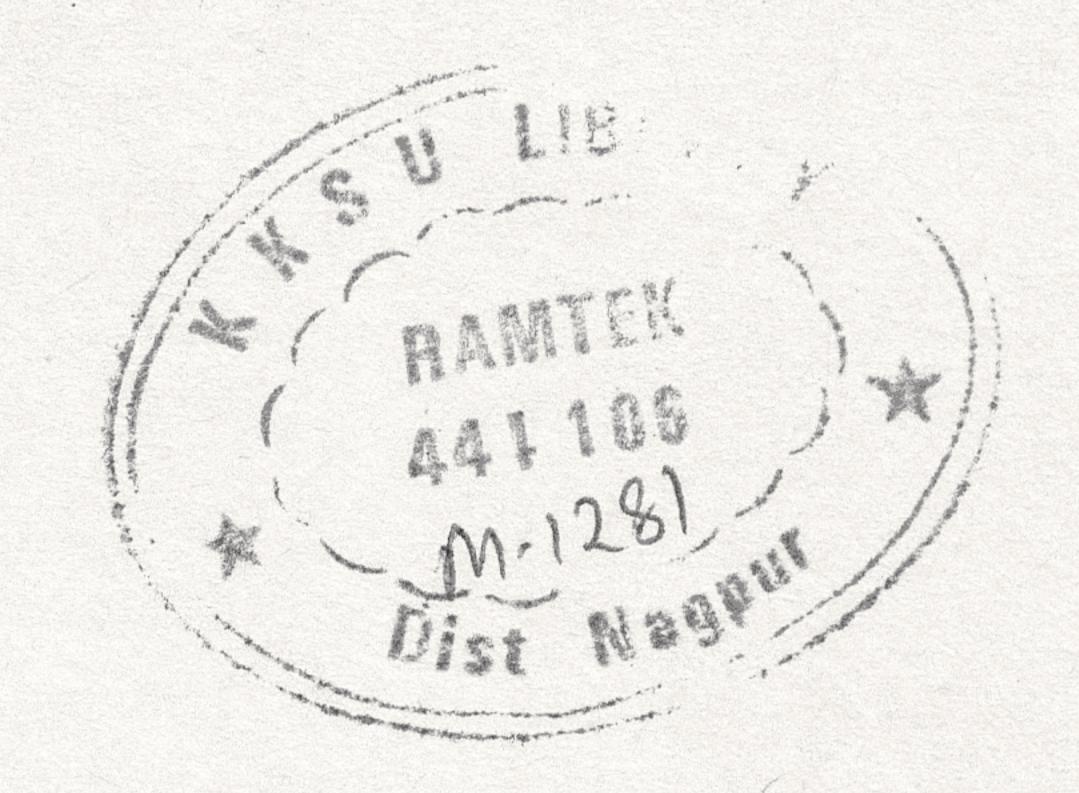
भीनामः - भी शिवः इष्ट्रम् सः एक प्राप्ते व्यक्ति का विकार प्राप्ते प्रक्रिक विकार के क्षित्र क्षित्र के क्षत्र क्षत्र के क्षत्र

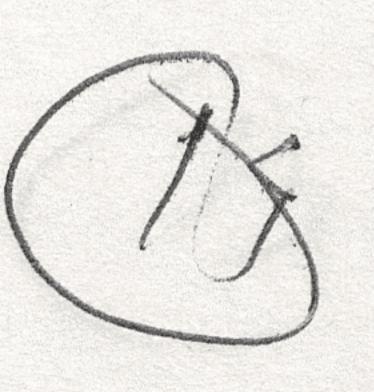


ATATA.



स्विति स्मान असस्यामः निति के विद्य मुखीय क्रिति दिने तर्दि वे द्रिवित्व विद्यान एवा मान मा स्वित्व ने मियक तिमती दिवा । उत्ते क्ष्मा ना स्वक स्वित व्यव विद्यान प्रमाप ने ते स्वता विद्यान के स्वता विद्यान क्षेत्र स्वता विद्यान क्षेत्र स्वता विद्यान क्षेत्र क्षे





,CREATED=20.10.20 15:30 TRANSFERRED=2020/10/20 at 15:37:10 ,PAGES=14 ,TYPE=STD ,NAME=S0004242 ,Book Name=M-1281-DHAVNIMANJARI ,ORDER_TEXT= ,[PAGELIST] ,FILE1=0000001.TIF ,FILE2=00000002.TIF ,FILE3=0000003.TIF ,FILE4=0000004.TIF ,FILE5=0000005.TIF ,FILE6=0000006.TIF ,FILE7=0000007.TIF ,FILE8=0000008.TIF ,FILE9=0000009.TIF ,FILE10=0000010.TIF FILE11=0000011.TIF FILE12=0000012.TIF ,FILE13=0000013.TIF FILE14=0000014.TIF

[OrderDescription]